युग प्रणेता-स्वामी विवेकानन्द

डॉ॰ अर्चना सिंह
एसो. प्रो., हिन्दी
कु.मा.रा.म.स्ना. महाविद्यालय
बादलपुर

डॉ॰ रिचा
असि. प्रो., भौतिक विज्ञान
कु.मा.रा.म.स्ना. महाविद्यालय
बादलपुर

''हमें तीन चीजों की जरूरत है। वे हैं, अनुभव करने के लिए हृदय, विचार करने के लिए मस्तिष्क और काम करने के लिए हाथ। खुद को शक्ति का स्रोत बनाओ।''

-*'स्वामी विवेकानन्द'*

प्रागैतिहासिक काल से लेकर मानव के क्रमिक विकास में बौद्धिक क्षमता अर्जित करते हुए मानव आज नित नई खोजों, जिज्ञासाओं, परिकल्पनाओं, प्रतिद्वन्दताओं एवं चुनौतियों के आगोश से व्यवस्था परिवर्तन से साक्षात्कार करता हुआ अपने प्रभुत्व को स्थापित करने को संघर्षशील है। सामाजिक अस्तित्व कायम करना भी एक बड़ी चुनौती है। समाज में व्याप्त निरक्षरता, पाखण्ड, अन्धविश्वास, आडम्बर, दासता, अत्याचार, सती-प्रथा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह निषेध इत्यादि सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति दिलाने के लिए इस भूमि पर अनेक महापुरूष अवतरित हुए। जहाँ संत कबीर ने अत्यन्त सरलता व निर्भयता से जीवन दर्शन को समाज के आगे प्रस्तुत किया, महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा के रूप में दो अमोघ अस्त्रों का महत्व अपने जीवन के माध्यम से चरितार्थ किया वहीं स्वामी विवेकानन्द जी ने अंधविश्वास व रूढ़िवादिता से ग्रसित समाज को धर्म की व्यावहारिक और वैज्ञानिक व्याख्या दी तथा सुसंस्कृत, शांतिपूर्ण व समृद्ध समाज के सृजन का मार्गप्रशस्त किया। स्वामी जी उस समय हमारे सामने आये जब समाज रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वास से पीड़ित था। इस स्थिति का गहरा प्रभाव स्वामी जी की विचारधारा पर पड़ा और उन्होंने इन समस्याओं के

ISBN : 978-93-80216-06-5

Dr Archana Singh

65

13

समाधान का सूत्रपात किया। उन्नीसवीं शताब्दी में विदेशी शासन की दासता से दु:खी और शोषित हो रही भारतीय जनता को स्वामी जी ने अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष के लिए प्रोत्साहित किया। अपनी ओजस्वी वाणी से उन्होंने जन-मानस के मन में स्वतंत्रता का शंखनाद किया। भारत माता की गुलामी और तिरस्कार को देखकर स्वामी जी का मन व्याकुल हो जाता था। उनके मन में राष्ट्रप्रेम कूट-कूट कर भरा था। मद्रास के अनेक युवा शिष्यों को उन्होंने लिखा था कि ''भारत माता हजारों युवकों की बलि चाहती है, याद रखो, मनुष्य चाहिए पशु नहीं''

देश को सम्पन्न बनाने के लिए धन से ज्यादा हिम्मत, ईमानदारी और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। स्वामी जी के अमृत वचन आज भी देशवासियों को प्रोत्साहित करते हैं। उनमें चिंतन व सेवा का संगम था। विवेकानन्द जी ने भारतीय चिंतन से विदेशों में भारत का सम्मान बढ़ाया। भारत माता के प्रति उनके मन में अपार श्रद्धा थी। जब वे सन् 1896 में विदेश से भारत लौटे तब जैसे ही जहाज किनारे लगा उन्होंने दौड़कर भारत-भूमि को साष्टांग प्रणाम किया और रेत में ऐसे लोटने लगे जैसे कोई बच्चा माँ की गोद में पहुँचा हो।

आज हमारा-देश स्वतंत्र होने के बावजूद अनगिनत समस्याओं से जूझ रहा है। बेकारी, प्रदूषण, अन्न-जल तथा महँगाई की समस्याओं से देश की जनता त्रसित है। ऐसी विपरीत परिस्थितिओं में भी स्वामी विवेकानन्द जी का विश्वास था कि हमारा देश उठेगा, संपूर्ण ऊपर उठेगा और इसी जनता के बीच से ऊपर उठकर विश्व में चेतना का संचार करेगा। स्वामी जी ने भजन में भी अपनी इस आस्था को व्यक्त करते हुये युवाओं को आह्वान किया है-

जागो फिर एक बार यह तो केवल निन्द्रा थी, मृत्यु नहीं थी
नव जीवन पाने के लिए कमल नयनों के विरा के लिए।
एक बार फिर जागो, अतुल विश्व तुम्हें निहार रहा है हे सत्य

ISBN : 978-93-80216-06-5